SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महाकवि माघ प्रणीतम् शिशुपालवध महाकाव्य में नदियों का स्वरूप

खुशवन्त कुमार माली, शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

खुशवन्त कुमार माली, शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/11/2022
Revised on : -----
Accepted on : 21/11/2022
Plagiarism : 00% on 14/11/2022

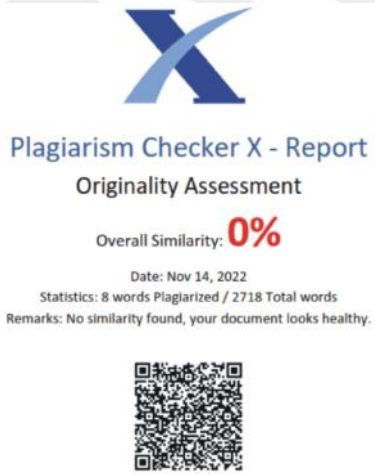

शोध सार

महाकवि माघ ने अपने अक्षुण्ण कीर्ति समन्वित महाकाव्य शिशुपालवध में राजनीति, दर्शन, कूटनीति सह प्रकृति का सूक्ष्मता से सांगोपांग वर्णन किया हैं। उन्होंने प्रकृति के समस्त घटक यथा निर्झर, नदियों, प्रस्तर, ऋतुएँ, वन, पर्वत तथा वन्य जीवों का अत्यंत मोहनीय वर्णन अनेक उपमाओं, आभाणको सहित किया हैं। यह निदर्शन यथार्थ तो हैं साथ ही साथ प्रेरणादायी, प्रकृति–प्रेम और प्रकृति में सहज रुचि को उत्पन्न करने वाला हैं। मानव मात्र को नदियों से जोड़कर उनके संरक्षण, संवर्धन और पुनर्भरण हेतु सकारात्मक ऊर्जा व भाव उत्पन्न करने वाला हैं। विवेच्य शोध पत्र भी यही शिक्षा देता हैं। शिशुपालवध महाकाव्य में अलकनंदा, गंगा, यमुना नदियों का आंकारिक–नायिका, पापमोचिनी, शास्त्रज्ञान युक्त, मोक्षदायिनी, पतितपावनी, पर्वत–पुत्री, सागर–नायिका, शिव की अष्ट् मूर्ति समन्वित, मातृ, भगिनी स्वरूपों आदि रूपों में निदर्शन हुआ हैं। शोध्य विषय का लेखन मानव मात्र में नदियों के इसी स्वरूप का उपस्थापन करवाना है। इनके इसी रूप से उनमें इनके महत्व, उपादेयता व जीवानाधार स्वरूप से मनुष्यों को जागृत किया जा सकेगा। उनमें इनके प्रति आकर्षण, परिजन–भाव जागृत हो सकेगा। वे इनके प्रदूषित वर्तमान स्वरूप से खिन्न होकर इनके संरक्षण हेतु सकारात्मक प्रयास करेंगे। नदियाँ ही मानव के आर्थिक, नैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की आधारशीला हैं। उनमें स्थित अपार स्वच्छ जल संपदा मानव मात्र के जीवन धारण का आधार हैं। अतः उसका स्थायित्व अत्यंत आवश्यक हैं। यह शोध पत्र इस दिशा में सकारात्मक दृष्टि देगा। मनुष्य नदी संरक्षण, संवर्धन और पुनर्भरण हेतु सामुदायिक सामाजिक प्रयासों का चिंतन करेंगे। इनके तटों तथा तटों पर स्थित तीर्थों, मठों, मन्दिरों आदि के पुर्नत्थान और विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकेगा। हिमालय प्रदेश की सदानीरा नदियां पुनः अपने मूल स्वरूप में लौटकर अपने पिता पर्वत के घर क्रीडा करते हुए स्वामी

सागर के घर उसी उत्साह, आन्नद, उमंग व स्वच्छ जलराशि स्वरूप धन को धारण कर अग्रगामिनी हो सकेगी जो आज प्रदूषण से संक्रमित हैं।

मुख्य शब्द

नदी, महाकाव्य, शिशुपाल वध.

संस्कृत वाड्.मय के अर्न्तगत वृहतत्रयी में परिगणित महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवध संस्कृत साहित्य की अनुपम निधि है। महाकवि की कीर्ति को अक्षुण्ण करने व जाज्वल्यमान नक्षत्र सदृश उपस्थापन में शिशुपालवध का अद्वितीय स्थान हैं। माघ का प्रकृति चित्रण अनेक वैशिष्ट्य लिए हुए हैं। सरोवर, वन, उपवन, पर्वत, नदी, वृक्ष, संध्या, प्रातः, रात्रि आदि प्रकृति के विविध रूपों का सजीव, हृदयस्पर्शी वर्णन किया हैं। इस दृष्टि से शिशुपालवध का नवम एवं एकादश सर्ग अत्यंत महनीय हैं।

शिशुपालवध में 'घण्टामाघ' आदि अनेकानेक आभाणकों से विभूषित महाकवि माघ ने नदियों का निदर्शन समुद्र, पर्वत, तीव्र जलप्रवाह (बाढ़), युद्ध आदि के आलोक में किया है साथ ही साथ यमुना, गंगा, गंगा–यमुना व आकाशगंगा आदि के रूप में भी वर्णन हुआ है। माघ की प्रकृति विषयक उपमाएं नीरस में भी प्राण का संचार कर देती है। यथा–

नदीपति समुद्र को मिर्गी का रोगी समझना।[1]

जल को (वृष्टि द्वारा) तैयार की गयी तथा पुनः समुद्र में प्रवेश करती हुई नदियों को वासुदेव श्री कृष्ण द्वारा देखना,[2] पति(समुद्र) को प्रापत करने (समुद्र मिलन) के लिए आगे चली हुई स्वोत्पन्न (अपने से निकली हुई) नदियों के लिए वत्सलता से रैवतक पर्वत मानों पक्षियों के करूण कूंजन द्वारा रो रहा है।[3] रैवतक पर्वत पर विकसित कमलोंवाले जल हैं, जिनमें नदी (जल प्रवाहों) से तटद्वय को दोनों भागों में धारण करते हुए दिन के रम को दूर करते हुए प्रवाहमान है[4] नदियों की समाप्ति का भोग नहीं होने से वे सम्पत्तियाँ निरर्थक होती है, सैनिको ने इन्हीं सम्पत्तियों का उपभोग स्नान, जलपान, वस्त्रप्रक्षालन, सुवाशित सुपुष्पित कमलों का ग्रहण तथा मृणालदण्ड़ों के भक्षण के रूप में कर, इस लोक निन्दारूप दोष को दूर कर दिया।[5]

नदियों के जल में स्त्रियों की जलक्रीड़ा यथा जलक्रीड़ार्थ नदी प्रवेश अन्नतर उनकी हद के समान गहरी नाभियों में प्रविष्ट होकर बहने से वेग मन्द पड़ गया तथा उन स्त्रियों की पुल के खम्भे बाँध के समान मोटी मोटी जंघाओं से पानी पीछे की ओर घूमकर बहने लगा और जब क्रीड़ार्थ एक हथेली में पानी लेकर दूसरी हथंली से मारने पर होने वाले उन्होंने शब्द के समान स्तनप्रान्त से स्खलित होने से शब्द करता हुआ पानी धीरे–धीरे बहने लगा।[6] पर्वत में नदियों का अवगाहन पंगुरूप पताका तथा झाूल से रहित होकर सेना के हाथियों के बहाने से जाना।[7] अंकुश कं प्रहार की प्रवाह किये बिना हाथी की जल क्रीड़ा से नदी तट पर जल भरने वाले लोगों का खाली जलपात्र लिए खडे रहना।[8] अनुपम, अलौकिक व परमआन्निदत नायिका नदी और हाथी की सम्भोग में रतिक्रीडा (नदी हाथी क्रीड़ापूर्वक) सम्भोग कर आपस में वस्त्र परिवर्तन कर लिए है अर्थात् सम्भोग करने के उपरान्त शीघ्रतावश नायिकारूपिणी नदी के कमलपरागरूपी वस्त्र को हाथी ने और हाथी के गैरिकपरागरूपी लाल वस्त्र को नदी ने धारण कर लिया है।[9]

तेल की बूँद के समान फैलते मदजल की नदी के साथ क्रीड़ा अर्थात् (हाथियों ने जो अपने मदजल के चन्द्र से नदियों को नेत्र श्री समर्पित की, नदियों ने भी हाथी के गीले शरीर में सेट हुए नील कमल की पंखुडियों से उस नेत्र श्री को बदले में तत्काल प्रत्यार्पित कर दिया।)[10] बड़े– बड़े बैलों की नदियों के किनारों से क्रीड़ा (नदियों के गीले तअ को उखाडने से मृत्पिण्ड से शिखर (मस्तक भूषण) युक्त अग्रभाग वाले अर्थात् अगले भाग में मिट्टी लगाएं, ऊपर में मिट्टी के लगने से दोनों किनारों में कलङ्करूपी मलयुक्त अर्द्धचन्द्र की अपेक्षा अधिक शोभते हुए; सींगों से दूसरें बैलों की सींगों को उखाड हुए महोक्ष (बड़े–बड़े बैल) गम्भीर गर्जन करते हुए नदियों के किनारों को उखाड़ना[11] अत्यन्त गम्भीर नदियों को हिममयी करने वाली अर्थात् अत्यन्त ठण्डी हेमन्त वायु।[12] मेघ के बरसते रहने से नदियों

का भरना[13] यादव स्त्रियाँ जलवाली नदी के समान सुशोभित[14] नदी का प्रवाह तट प्रदेशों में बढ़कर तड़ागों के भीतरी भागों को पूर्णकर तीरस्थ भूभागों को लाँघकर कूओं को लबालब भरता हुआ मैदान में फैल जाता है।[15]

नदियाँ पराजयजनय लज्जा के कारण पत्थरों पर संख्यालित होती हुई शीघ्रता के साथ से बह रही थी[16] नदी के वेग से फटे हुए मुक्तिकोष से निकले हुये मोतियों से शोभित किये गये नदियों के रेतीले तट को टूटे हुए मुक्ताहारों से सुन्दर अपने पलंगों के समान माना।[17] नदयिकाओं कामिनियों का रतिक्रीड़ा अन्नतर नदी जल में स्नान (प्रियतम के शरीर से गाढालिङन करने पर लहे हुए इसके सतनादि पर लगाये गये कुंमचंदन आदि के लेप को नदी में यह पानी इस समय अच्छी तरह धो डालेगा।[18] दीर्घावधि तक जलक्रीडा से सुकुमार रमणियों के नेत्र लाल हो गये[19] नदी के स्वामी समुद्र[20] निशाकर ने बडे–बडे तरंगरूपी बाहुओं से तटप्रान्त का आलिंगन करने वाले नदियों के प्रति अत्यंत गम्भीर समुद्र को भी क्षुब्ध कर दिया[21] नदियाँ प्रातः काल के धाम से मिश्रित परिपक्व मदिरा के समान असगवर्ण तथा दोनों तटों से अवरूद्ध जल को सूर्य के किरण रूपी बाणों से सब ओर क्षत (आहत किये गए) अनधकाररूप गहनों के समूह के रक्त के समान धारण करती हुई[22] जल समूह रूपिणी सैकडों नदियों वाले सैनिक[23] श्री कृष की सेना द्वारा ध्वजाओं में ऊँचाई से तिरस्कृत किये गये वृक्षों वाले तथा जन समूह से राके गये तीव्र नदी प्रवाह वाले पर्वतों के फिर ऊपर होना[24] चारों ओर अमार्ग में फैली हुई एवं सब मार्गों से व्याप्त उस अपनी सेना से ऊँचे–ऊँचे किनारों को पार की हुई नीचे जाने वाली नदियों को प्रतिकुलनाम वाली करना[25] गिरती हुई धूली ने ही नदियों के जलों को पङ्किलकर दिया[26] हाथियों ने समुद्रगामिनी नदियों को पङ्कयुक्त कर दिया[27] सूखे हुये जलों वाली पुरानी नदियों को स्थल के समान मढ के जलों से तीरों को तोड़ने वाली वैसी दूसरी नदियों को उत्पन्न कर दिया[28] छत्रों से पराजित हुए हंसोवाली नदियां[29] नदीपति (समुद्र)[30] नदियां जल प्रवाह किनारे पर स्थित वृक्षों से क्रीडा करता है[31] नदी जल को बढ़ाने व बढ़ाकर क्षुनध–मलिन करने वाले मेघों से समुद्र जल मलिन नही होता[32] निरन्तर वेगपूर्वक आगे बढती हुई नदियों का समुद्र के बड़े–बड़े तरंगों के साथ अत्यंत कोलाहल के साथ दोला युद्ध[33] सब ओर आती हुई नदियों को अकेला समुद्र रोकता है[34] आदि विशद्ध रूपों में निरूपित हुआ है। इस प्रकार नदियों का अलग अलग प्रसंगों में आलंकारिक, महिमामय, यथार्थ व मनोज्ञ निदर्शन शिशुपालवध में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त मुख्य–मुख्य जिन नदियों का वर्णन व्याख्यायित हुआ है, वो इस प्रकार है–

1. **आकाशगंगाः** श्रीकृष्ण द्वारा दो भागों में विभाजित (पृथक–पृथक प्रवाहित) आकाशगंगा की दो धाराओं के गिरने से उत्पन्न समुद्र की शोभा को धारण किया।[35] आकाश गंगा की उपमा[36] आकाशगंगा में स्नान करने से धूले हुए अंगो वाले दिग्गज[37] रूपों में वर्णित है। आकाशगंगा वस्तुतः आकाशमार्ग से पृथ्वी पर अवतरित होने के कारण आभाणक विश्रुत हुआ हो। इन्द्रलोक में प्रवाहित होने वाली नदी भी सम्भाव्य हैं। महाकवि कालिदास पर्वतराज हिमालय को देवात्मा[38] स्वीकार करने से सभी देवताओं का निवास स्थान हिमालय सिद्ध होता हैं। अतः हिमालय के बढरीकाक्षम[39] के निकट उद्गमित अलकनंदा[40] का स्त्रोत सम्भवतः हैं। यह उत्तराखंड में संतोपंथ और भगीरथ खरक नामक हिमनदों से निकलती हैं। यह नदी घाटी में लगभग 195 किमी तक प्रवाहित होती हैं। देवप्रयाग में अलकनंदा और भागीरथी का संगम होने पर गंगा[41] अस्तित्व में आती है।
2. **गंगाः** महानदियाँ सपत्नीरूप पहाड़ी नदियों को पतिरूप समुद्र के पास पहुँचा देती है।[42] श्रीकृष्ण की करधनी से चरणतक लटकती हुई मोतियों के लडी की शोभा ऊपर की ओर निरन्तर प्रवाहित होने वाली गंगा की धारा का जल[43] शंकरजी के जटा समूह से गंगाजी के जल का उद्गम सेनाओं के सदृश[44] समुदग का गमन हिमालय पर्वत की गुफा के बग्रभाग को जाते हुए गंगा के जल प्रवाह के समान[45] गंगाजी के निर्मल जल के प्रवाह से आर्द्र आठ मूर्तियों को धारण करने वाले शिवजी[46] भगवान श्रीकृष्ण का ऊरूप्रदेश गंगा के जल के प्रवाह के समान नदी (गंगाजी) का पुत्र (भीष्म)[47] निम्नगा अर्थात् नीचे की ओर जाने वाली नदी[48] आदि स्वतंत्र रूप से गंगा का वर्णन महाकविप्रणीत शिशुपालवध में प्राप्त होता है। यह उत्तरी भारत की सबसे प्रमुख नदी हैं। ट्रैनो के मतानुसार 'यह तीन महाद्वीपों में सबसे बड़ी नदी हैं जिसकी कम से कम लम्बाई 3000 किमी. हैं।[49]

3. **यमुना:** यदि शास्त्र से अनुमान प्रबल है तो यमुना ने ही समुद्र को पूरा किया है[50] (गंगा ने नदी नही, यही उपयुक्त है; अनयथा यदि गंगा ने समुद्र को पूरा किया होता तो समुद्र का पानी गंगा के प्रवाह से भस्म रहित किये गये शंकरजी के कण्ठ के समान (कृष्ण वर्ण) कैसे होता?) तमाल के समान कृष्णवर्ण वाली और बहुत लम्बी[51] (वेग से पृथ्वी का अतिक्रमण करने के लिए ततपर सेनारूपी समुद्र के आगे थोडे समय तक उसकी सीमा के समान शोभित हुई) रमणियों द्वारा वेग से चलती नावों द्वारा यमुना पार करना[52] ऊँचे– ऊँचे गजराज का अवज्ञा के साथ गहरे यमुना जल में प्रवेश[48] तथा जलक्रीडा, घोडो द्वारा पूँछ फैलाकर यमुना पार करना[53] बैलों द्वारा क्रीडा करते हुए यमुना पार करना[54] पृथ्वी की लम्बी वेणी सदृश सुशोभित[55] (यादव राजाओं द्वारा केश रचना के समान दो भागों में विभक्त, भैंसे सींग के समान श्यामवर्ण कानितवाली और सिनदूर लगाये हुए गज रूप कंकणों के शिरोभूषणों वाली यमुना नदी पृथ्वी की लम्बी वेणी जैसी सुशोभित) तैरने में निपुण तैराक यमुना की तरंगो को हटाते हुए तैरकर पार कर गए[56] बैलों, हाथियों व रथों से सुशोभित श्रीकृष्ण की सेना द्वारा यमुना लाँघना[57] श्रीकृष्ण का यमुना लाँघने का यात्रावृत[58] यमुनाह्रद के ऊपर स्थित हंस समूह की शोभा[59] श्रीकृष्ण का उत्तरप्रदेश मानो ऊपर उठे हुए यमुना के प्रवाह के समान[60] आदि रूपों में सुन्दरतम आलंकारिक यथार्थ एवं मनोरम यमुना निदर्शन स्वतंत्र रूप से शिशुपालवध में प्राप्त होता है। यमुना नदी का उदगम स्थल यमनोत्री हिमनद से है जो गढ़वाल हिमालय में 6330 मीटर पर स्थित हैं। यमुना नदी की कुल लम्बाई 1385 किमी हैं। चम्बल, बेतवा, केन आदि प्रायद्वीपीय पठार से मिलने वाली इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं।[61] इसके अतिरिक्त गंगा–यमुना का युगल वर्णन पृथक–पृथक रूप से विभिन्न प्रसंगों में भी वर्णित है जो निम्न प्रकार है–

4. **गंगा–यमुना:** नारद–श्रीकृष्ण मिलन गंगा–यमुना संगम सदृश[62] पहाडी नदियाँ (गंगा) बाकद महानदियों की सहायता से समुद्र में पहुँच जाती है[63] नीले जल वाली नदियाँ रैवतक पर्वत पर यमुना के नीले जल से सुशोभित[64] (मिश्रित श्वेत जलवाली गंगा की शोभा को धारण करती है अर्थात् तीर्थराज प्रयाग में हुए गंगा तथा यमुना के समान शोभती है।)[65] सेना वर्णन में सेना की तुलना सेना से करते हुए उसे गंगा से भी बडी बताया (ऊँचे–ऊँचे पर्वतों से भी नहीं रूकी हुई और यमुना आदि बडी–बडी नदियों को भी आच्छादित अपनी विशालता से आत्मसात करती हुई गंगा नदी तीन मार्गों से चलने के कारण अनवर्थ नामवाली 'त्रिमार्गगा' कहलायी[66] आदि प्रसंगों से यमुना–गंगा संयुक्त वर्णन भी महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवध में प्राप्य है, जो नितान्त अनुपम, मनमोहक, आकर्षक, चित्तआह्लादजनक हैं।)

fu"d"k

महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध महाकाव्य संस्कृत साहित्य का हिरकरत्न है। राजनीति, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, आचार विचार के साथ–साथ प्रकृति वर्णन में भी अद्वितीय हैं।

महाकवि ने प्रकृति के विविध घटकों यथा– नदी, पर्वत, निर्झर, जीव–जन्तु आदि का अत्यंत नयनाभिराम मनमोहक वर्णन किया है। बलराम जी का मदिरा ग्रहण, सेनाओं के कूच, हाथियों की जलक्रीड़ा, रैवतक पर्वत आदि के वर्णन के क्रम में कवि ने नदियों का अत्यंत हृदयआह्लादकारी वर्णन किया हैं जो अत्यंत रमणीय व चित्ताकर्षक हैं। वे समुद्र को नदीपति कहकर नदियों को नायिका के रूप में उपस्थापित करते है जो पितृगृह अर्थात् पर्वत से निकलकर स्वामी (समुद्र) में समागम हेतु अग्रगामिनी हैं। महाकवि का नदियों का ऐसा आलंकारिक वर्णन संस्कृत साहित्य की अक्षुण्ण निधि है, जो वस्तुतः सर्वदा–सर्वथा दुर्लभ हैं।

श्रीकृष्ण की करधनी से चरण तक लटकती मोतियों की लड़ी गंगा की धारा की उपमा अत्यंत मोहनीय हैं। निरन्तर प्रवाहित गंगा का निर्मल जल आद्यवधि पर्यन्त मानव जाति का कल्याण कर रहा हैं। यह वर्णन लोक में गंगा के महत्त्व व उपादेयता को स्वतः प्रामाणित करता हैं। यदि शास्त्र से अनुमान प्रबल है तो यमुना ने ही समुद्र को पूर्ण किया है। यह वर्णन उस समय में यमुना को गंगा से भी विशिष्ट व मोहनीय बनाता है तथा लोक में उसके महत्त्व का उपस्थापन भी करता हैं। लेकिन अत्यंत खेद का विषय है कि वह यमुना अब 'मृत' घोषित की गयी हैं।

उसका जल आचमन, जलक्रीड़ा और सिंचाई हेतु उपयुक्त नही है। विचारणीय तथ्य है उसकी ऐसी दुर्दशा हेतु जिम्मेदार कौन? इस भयावह प्रदूषण का सृष्टा कौन? चिरमौन यदि उत्तर है तो वेदना की अतिशयता से मेरा करबद्ध आग्रह है कि नदियों को प्रदूषित करना बंद कीजिए। उनके संरक्षण, संवर्द्धन व पुनर्भरण पर गहन चिंतन कीजिए।

मध्यकाल में जिस यमुना में व्यापार होता था, उसकी दशा आज सभी के समक्ष हैं। काकाकालेकर ने नदियों को 'लोकमाता' कहा, जो शास्त्र से प्रामाणित है। अतः वर्तमान मानव जाति को भी नदियों से कोई न कोई संबंध जोड़ना चाहिए। सम्भवतः उससे संरक्षण, संवर्द्धन का भाव मन मस्तिष्क में स्वतः पुनः पुनः स्मरण होगा।

सन्दर्भ सूची

1. 72/3 – फेनायमानं पतिमापगानामसावपस्मारिणमाश्शङ्के।।
2. 75/3 – आलोकयामास हरिः पतन्तीर्नदीः स्मृतीर्वेदमिवाम्बुराशिम्।।
3. 47/4 – अपशङ्कमङ्कपरिवर्तनोचिताश्रलिताः पुरः पतिमुपैतुमात्मजाः।
अनुरोदितीव करूणेन पत्रिणां विरूतेन वत्सलतर्येण निम्नगाः।।
4. 66/4 – दधद्विरभितस्तटौ विकचवारिजाम्बूनदैविनोदितदिनक्लमाः कृतरूचश्व जाम्बूनदैः।।
5. 25/5 – सस्नुः पयः पपुरनेनिजुरम्बराणि जक्षुर्बिसं धृतविकासिबिसप्रसूनाः।
सैन्याः श्रियामनुष्भोगनिरर्थकत्व दोष प्रवादममृजन्नगनिम्नगानाम्।।
6. 29/5 – नाभिह्रदैः परिगृहीतरयाणि निम्नैः स्त्रीणां बृहज्जघनसेतुनिवारितानि।
जग्नुर्जलानि जलमङ्कवाद्यवलगुवलगद्घनस्तनतटस्खिलतानि मन्दरम्।।
7. 32/5 – ते जग्मुरद्रिपतयः सरसीर्विगाढु माक्षिप्तकेतुकुथ सैन्यगजच्छलेन।।
8. 33/5 – रूद्धे गजेन सरितः सरूषावतारे रिक्तोदपात्रकरमास्त चिरं जनौघः।।
9. 39/5 – संसर्पिभिः पयसि गैरिकरेणुरागैरम्भोजगर्भरजसाङ्गनिषङ्गिणा च।
क्रीडोपभोगमनुभूय सरिन्महेभावन्योन्यवस्त्रपरिवर्तमिव व्यधत्ताम्।।
10. 40/5 – या चन्द्रकैर्मदजलस्य महानदीनां नेत्रश्रियं विकसतो बिदधुर्गुजेन्द्राः
तां प्रत्यवापुरविलम्बितमुत्तरन्तो धौताङ्गलग्ननवनीलपयोजपत्रेः।।
11. 63/5 – मृत्पिण्डशेखरित कोटिभिरर्धचन्द्रं शृङ्गैशिखाग्रगतलक्ष्ममलं हसद्भिः।
उच्छृङ्गितान्यवृषभाः सरितां नदन्तो रोधांसि धीरं मवचस्करिरे महोक्षाः।।
12. 55/6 – गजपतिद्वयसीरपि हैमनस्तुहिनयन् सरितः पृषतां पतिः।
सलिलसन्ततिमध्वगयोपितामतनुतातनुतापकृतं दृशाम्।।
13. 72/6 – सहसायन्त नदी पपाट लाभे।
14. 23/7 – सरित इव सविभ्रमप्रयातप्रणदित हंसकभूषणा विरेजुः।।
15. 74/7 – स्वेदापूरो युवतिसरितां व्याप गण्डस्थलानि।।
16. 8/8 – पाषाण्स्खलनविलोलमाशु नूनं वैलक्ष्याद्ययुखरोधनानि सिन्धोः।
17. 9/8 – मुक्ताभिः सलिलरयास्तशुक्तिपेशीमुक्ताभिः कृतरूचि सैकतं नदीनाम्।।
18. 41/8 – संक्रान्तं प्रियतमवक्षसोडङ्गरागं साध्वस्याः सरसि हरिष्यतेऽधुनाम्भः।।
19. 52/8 – प्रेयोभिः सह सरसी निषेव्यमाणा रक्त्वं व्यधित वधूदृशांसुरा च।।
53/8 – स्नान्तीनां बृहदमलोदबन्बुचित्रो.....
20. 30/9 – प्रथम प्रबुद्धनदराज सुतावदनेन्दुनेव तुहिनद्युतिना।।
21. 38/9 – उपगूढवेलमलधूर्मिभुजैः सरितामचुक्षुभदधीशमपि।

22. 49/11 – परिणतमदिराभं भास्करेणांशुबाणैस्मिमिरमिव वहन्त्यों भान्ति बालातपेन।
च्छुरितमुभयरोधोवारितं वारि नद्यः।।
23. 29/12 – बह्वयः प्रसर्पज्जनतानदीशतैर्भुवो बलैरन्तरयांबभूविरे।।
24. 53/12 – उत्सेधनिर्धूतमही रूहां ध्वजैर्जनावरूद्धोद्धतसिन्धुरंहसाम्।
25. 57/12 – अम्भोभिरूल्लङ्ितुङ्गरोधसः प्रतीपनाम्नीः कुरूते स्म निम्नगाः।।
26. 58/12 – क्षिप्तं समीरैः सरितां पुरः पतज्जलान्यनैषीद्रज एव पङ्कताम्।।
27. 59/12 – पङ्कं करापाकृतशैवलांशुकाः समुद्रगाणामुदवादयन्निभाः।।
28. 62/12 – कूलंकषोधाः सरित स्तथापराः प्रवर्तयामासुरिभा मदाम्बुभिः।।
29. 61/12 – दुरेऽभवन्भोजवलस्य गच्छतः शैलोपमातीतगजस्य निम्नगाः।।
30. 20/13 – पृथुफेनकूटमिव निम्नगापतेर्मरू तश्र सूनुरघुवत्प्रकीर्ण कम्।।
31. 75/16 – इति पूरइवोदकस्य यः सरितां प्रावृषिजस्तटद्रुमैः।
क्वचनापि महानखण्डितप्रसरः क्रीडतिभूभृतांगणैः।।
32. 18/16 – समाकुले सदसि तथापि विक्रियां मनोऽगमन्न मुरभिदः परोदितैः।
घनाम्बुभिर्बहुलितनिम्नगाजलैर्जलं न हि व्रजति विकारमम्बुधेः।।
33. 80/18 – आसीदोघैर्मुहुरिव महद्वारिधेरापगानां दोलायुद्धं कृतगुरूतरध्वानमौद्धत्यभाजाम्।।
34. 21/20 – कार्ष्णिः प्रत्यग्रहीदेकः सरस्वानिव निम्नगाः।।
35. 3/3 – मृणालसूत्रामलमन्तरेण स्थितश्चलच्चामरयोर्द्वयं सः।
भजेऽभिजः पातुकसिद्धसिन्धोरभूतपूर्वा रूचमम्बुराशेः।।
36. 8/3 – उभौ यदि व्योम्नि पृथक्प्रवाहावाकाशगङ्गापयसः पतेताम्।।
37. 64/17 – नभोनदीवयतिकरधौत मूर्तिभिर्वियदगतैरनधिगतानि लेभिरे।
चलच्चमूतुरगखुराहतोत्पतन्महीरजः स्नपनसुखानि दिग्गजैः।।
38. 1/1 – कुमारसम्भव
अस्ति उतरस्यां दिशि देवात्मा पर्वतराज हिमालयः।
39. वनपर्व– महाभारत 142,11
आकाशगंगा प्रयताः पांडवास्तेऽभ्यवादयन्।
40. शान्तिपर्व– महाभारत 127,3
यत्र साबदरी रम्या ह्रदोवैहायसस्तथा।
41. Gopal Madan (1990) K.S. Gautam (l.ik.) India through the ages. Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting Government of India, page 65
42. 104/2 – सपत्नीः प्रापयन्त्यन्धिं सिन्धवो नगनिम्नगाः।।
43. 20/3 – मुक्तामयं सारसनावलम्बिभाति स्म दामाप्रपदीनमस्य।
अंगुष्ठनिष्टयूतमिवोर्ध्वमुच्चौस्त्रिस्त्रोतसः सन्ततधारमम्भः।।
44. 65/3 – प्रजा इवाङ्गदरविन्दनाभेः शम्भोर्जटाजूटतटादिवापः।।
45. भारत का भूगोल – पृ.सं. 94 डॉ.संरेशचन्द्र बंसल – मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
46. 27/13 – प्रतिनादपूरितादिगन्तरः पतन्युरगोपुरं प्रति सः सैन्यसागरः।
सरूचे हिमाचलगुहामुखोन्मुखः पयसां प्रवाह इव सौर सैन्धवः।।

47. 18 / 14 – आप्लुतः स विमलैर्जलरभूदष्ट मूर्तिधरमूर्तिरष्टमी।।
48. 77 / 14 – व्योम्नि दिव्यसरिदम्बुपद्धतिस्पर्धयेव यमुनौघमुत्यि तम्।
49. 19 / 15 – काममयमिह वृथापलितो हतबुद्धिरप्रणिहितः सरित्सुतः।
44 / 15 – नृपतावधिक्षिपति शौरिमथ सुरसरित्सुतो वचः।
50. 21 / 15 – नीचि नियतमिव यच्चपलो निरतः स्फुटं स्वसि निम्नगासुतः।।
51. 69 / 12 – व्यक्तं बलीयान् यदि हेतुरागमादपूरयत्सा जलधिं न जाह्नवी।
गाङ्गौघनिर्भस्मि तश्म्भुकन्धरासवर्णमर्णः कथमन्यथास्य तत्।।
52. 70 / 12 – अभ्युद्यतस्य कृमितुं जवेन गां तमालनीला नितरां घृतायतिः।
सीमेव सा तस्य पुरः क्षणं बभौ बलाम्बुराशेर्महतो महापगा।।
53. 71 / 12 – लौलेररित्रैश्चरणैरिवाभितो जवादव्रजन्ती भिरसौ सरिज्जनैः।
नौभि प्रतेरे परितः प्लवोदितभ्रमीनिमीलल्लनावलम्बितैः।।
54. 72 / 12 – तत्पूर्वमंसद्वयसं द्विपाधिपाः क्षणं सहेला परितो जगाहिरे।
सद्यस्ततस्तेरूरनारतस्त्रुतस्व्दानवारि प्रचुरीकृतं पयः।।
55. 73 / 12 – प्रोथैः स्फुरद्भिः स्फुटशब्दमुन्मुखैस्तुरङ्गमैरायतकीर्णवालधि।
उत्कर्णमुद्वाहितधीरकन्धरैरतीयताग्रे तटक्षतदृष्टिभिः।।
56. 74 / 12 – तीर्त्वा जनेनैव नितान्तदुस्तरां नदीं प्रतिज्ञामिव तां गरीयसीम्।
शृङ्गैरपस्कीर्ण महतटीभुवामशोभतोच्चौर्नदितं ककुद्भताम्।।
57. 75 / 12 – सीमन्त्यमाना यदुभूभृतां बलैर्बभो तरद्भिर्गवलासितद्युतिः।
सिन्दुरितानेकपकङ्काङ्किता तरङ्गिणी वेणिरिवायता भुवः।।
58. 76 / 12 – अत्याहतक्षिप्रगतैः समुच्छ्रिताननुज्झित द्राधियभिर्गरीयसः।
नाव्यं पयः केचिदतारिषुर्भुजैः क्षिपद्भिरूर्मीनपरैवार्मिभिः।।
59. 77 / 12 – बिदलितमहाकूलामुक्ष्णां विषाणविघट्टनैरलघुचरणाकृष्टग्राहां विषाणिभिरून्मदैः।
सपदि सरितं सा श्रीभर्तुर्बृहद्रथ मण्डल स्खलितसलिामुललङ्गयैनां जगाम बरूथिनी।।
60. 1 / 13 – यमुनामतीतमथ शुश्रुवानमुं तपसस्तनूज इति नाधुनोच्चयते।
स यदाचलन्निजपुराहदर्निशं नृपतेस्तदादि समचारि वार्तया।।
61. भारत का भूगोल – पृ.सं. 94 डॉ.संरेशचन्द्र बंसल – मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ
62. 21 / 13 – यमुनाह्रदयपरिगहंसमण्डलद्युतिजिष्णु जिष्णु रभूतोष्णवारणाम्।।
63. 77 / 14 – व्योम्नि दिव्यसरिदम्बुपद्धतिस्पर्धयेव यमुनौघमुत्यितम्।।
64. 22 / 2 – प्रफुल्लतापिच्दनिर्भर भीषुभिः शुभैश्व सप्तच्छदपांशुपाण्डुभिः।
परस्परेणच्छुरितामलच्छवी तदैकर्णाविव तौ बभूवतुः।।
65. 200 / 2 – बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा।।
66. 26 / 4 – कालिन्दीजल निताश्रयः श्रयन्ते वैदग्धीमिह सरितः सुरापगायाः।।
67. 56 / 12 – अम्भोभिरूल्लङ्घततुङ्गरोधसः प्रतीपनाम्नीः कुरूते स्म निम्नगाः।।

****